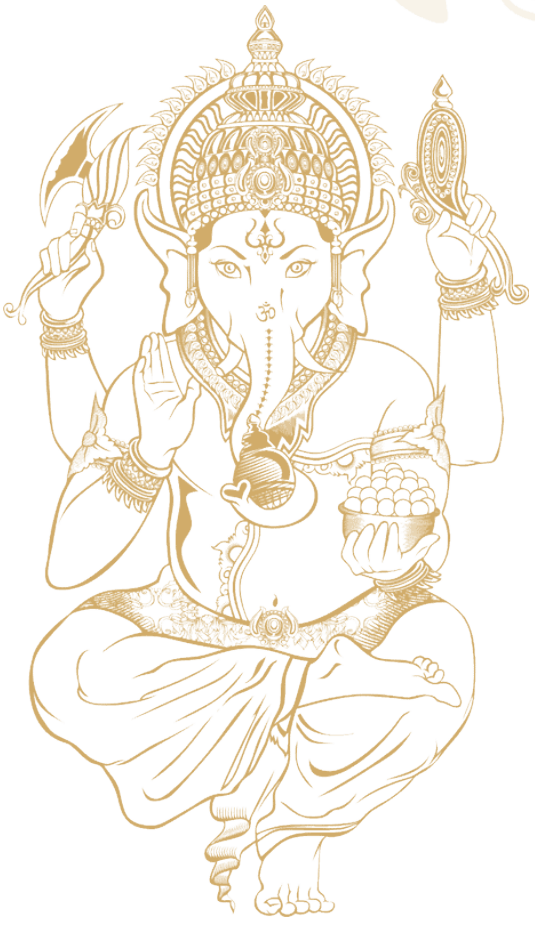

Mr.Grish

Ms.Meenal

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119298923

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
14-15/03/1995 :	जन्म तिथि	: 22/08/1998
मंगल-बुधवार :	दिन	: शनिवार
घंटे 03:15:00 :	जन्म समय	: 17:35:00 घंटे
घटी 51:08:07 :	जन्म समय(घटी)	: 28:06:44 घटी
India :	देश	: India
Bhiwandi :	स्थान	: Gwalior
19:18:00 उत्तर :	अक्षांश	: 26:12:00 उत्तर
73:04:00 पूर्व :	रेखांश	: 78:09:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:37:44 :	स्थानिक संस्कार	: -00:17:24 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:47:45 :	सूर्योदय	: 05:52:51
18:47:02 :	सूर्यास्त	: 18:47:21
23:47:35 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:50:10

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
केतु 5वर्ष 6मा 14दि	27:48:27	धनु	लग्न	मक	14:25:50	केतु 1वर्ष 7मा 25दि
सूर्य	00:03:09	मीन	सूर्य	सिंह	05:21:53	सूर्य
27/09/2020	02:46:57	सिंह	चंद्र	सिंह	10:10:56	17/04/2020
27/09/2026	19:58:39	कर्क व	मंगल	कर्क	07:15:35	18/04/2026
सूर्य 14/01/2021	06:13:00	कुंभ	बुध व	कर्क	22:15:23	सूर्य 05/08/2020
चन्द्र 16/07/2021	21:06:32	वृश्चि	गुरु व	मीन	02:15:34	चन्द्र 04/02/2021
मंगल 21/11/2021	20:20:48	मक	शुक्र	कर्क	17:19:08	मंगल 12/06/2021
राहु 16/10/2022	22:18:08	कुंभ	शनि व	मेष	09:45:10	राहु 06/05/2022
गुरु 04/08/2023	12:33:51	तुला व	राहु	सिंह	07:37:06	गुरु 22/02/2023
शनि 16/07/2024	12:33:51	मेष व	केतु	कुंभ	07:37:06	शनि 04/02/2024
बुध 22/05/2025	05:36:31	मक	हर्ष व	मक	16:10:58	बुध 11/12/2024
केतु 27/09/2025	01:13:59	मक	नेप व	मक	06:10:32	केतु 18/04/2025
शुक्र 27/09/2026	06:46:42	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	11:28:15	शुक्र 18/04/2026

लग्न-चलित

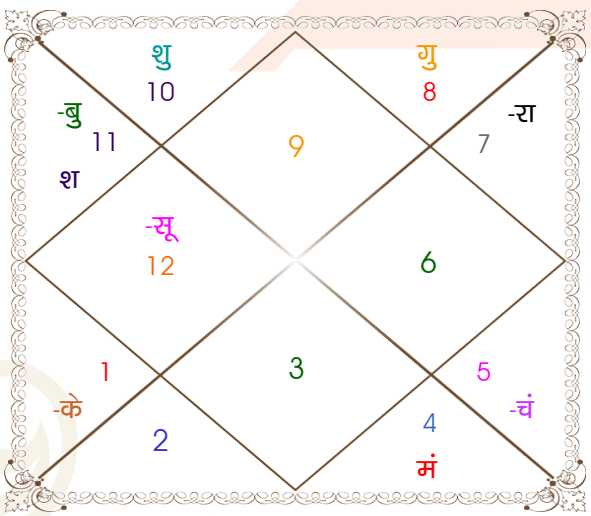

लग्न-चलित

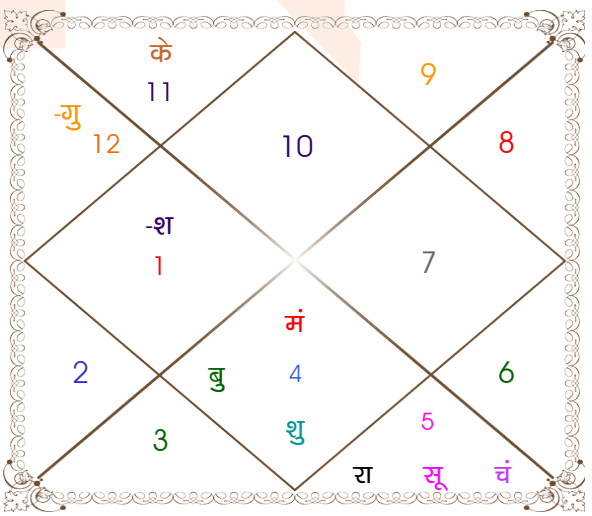

Pulak Sagarm - Hastrekha,Jyotish & Vastu
T - 13,Cosmo Tower,hanuman Chauraha
Jankganj, Gwalior pin code 474001

9425187186,9302614644
Astrodr.hcjain @gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	वनचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मूषक	मूषक	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	सिंह	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

डतण्ळतपेी का वर्ग मूषक है तथा डेण्डममदंस का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्ळतपेी और डेण्डममदंस का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्ळतपेी मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण्ळतपेी कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण्डममदंस मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण्डममदंस कि कुण्डली में सप्तम् भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेण्डममदंस कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि डेण्डममदंस कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु डेण्डममदंस कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डतण्ळतपेी कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्ळतपेी तथा डेण्डममदंस में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।